International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 18-07-2025, Accepted: 17-08-2025, Published: 02-09-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 63-65

कबीर और सूरदास का लोककाव्य पर प्रभाव

मनीष पटेल
अतिथि प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, माता सुंदरी कॉलेज, एनसीडबल्यूईबी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
भारतीय भक्ति आंदोलन के दो महान कवि कबीर और सूरदास ने अपने कालजयी काव्य से लोककाव्य पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव डाला है। यह शोध–पत्र इसी प्रभाव का एक विस्तृत, विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन लोकगीतों, कहावतों, मुहावरों और लोक कथाओं के साहित्यिक और सांस्कृतिक पाठों का गहराई से पाठ विश्लेषण करता है। इसके लिए, कबीर और सूरदास की रचनाओं के साथ–साथ संकलित लोक साहित्य का भी अध्ययन किया गया है। यह शोध सिद्ध करता है कि, इन कवियों का प्रभाव केवल साहित्यिक नहीं है, बल्कि यह लोकमानस, सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक मूल्यों में गहराई से समाहित है। इस अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि, उनका प्रभाव पहले के अनुमानों से कहीं अधिक व्यापक और गहन है, जिसे यहाँ अधिक प्रभावी ढंग से समझा जा सकता है।

मूल शब्दः कबीर, सूरदास, लोककाव्य, गुणात्मक विश्लेषण, भक्ति आंदोलन, सामाजिक प्रभाव, धार्मिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, भाषा, शैली, विषय–वस्तु, दर्शन, सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्य।

परिचय

भारतीय लोककाव्य, जो मौखिक परंपराओं के माध्यम से पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है, जनमानस की भावनाओं, विचारों और अनुभवों का एक प्रामाणिक दस्तावेज है। यह साहित्य अपने स्वाभाविक, सहज और प्रवाहमयी स्वरूप में बिना किसी कठोर कलात्मक बंधन के लोकजीवन का दर्पण है। इसकी रचनाकारिता अक्सर अज्ञात होती है, जो इसे पूरे जनसमुदाय की साझा विरासत बनाती है। लोककाव्य की यही सहजता कबीर और सूरदास जैसे कवियों के लिए एक शक्तिशाली माध्यम बनी, जिससे उनके संदेश जटिल साहित्यिक नियमों के बंधन से मुक्त होकर सीधे जनता तक पहुँचे।

15वीं और 16वीं शताब्दी का भक्ति आंदोलन एक परिवर्तनकारी युग था, जिसने सामाजिक और धार्मिक बाधाओं को तोड़कर भारतीय उपमहाद्वीप के आध्यात्मिक परिदृश्य को बदल दिया। कबीर और सूरदास इस आंदोलन के दो प्रमुख स्तंभ थे। कबीर ने सामाजिक अन्याय और धार्मिक पाखंड को चुनौती दी, जबकि सूरदास ने प्रेम और भक्ति को अपने काव्य का केंद्र बनाया। भक्ति आंदोलन ने केवल धार्मिक सुधार नहीं किए, बल्कि भारतीय साहित्य और कला को भी समृद्ध किया। कबीर और सूरदास का लोककाव्य पर प्रभाव इसी व्यापक सांस्कृतिक क्रांति का एक अभिन्न अंग था, जिसने उनके संदेशों को समाज के हर स्तर तक पहुँचाया।

यह शोध कबीर और सूरदास के लोककाव्य पर प्रभाव का गुणात्मक विश्लेषण करेगा। जहाँ पिछले अध्ययनों ने उनके योगदान का सतही विवरण दिया है, वहीं यह अध्ययन उनके प्रभाव के क्षेत्र और गहराई को एक नया दृष्टिकोण देने का प्रयास करता है। इस शोध के मुख्य प्रश्न हैं: कबीर और सूरदास के काव्य की विषय–वस्तु, भाषा और शैली ने लोकगीतों और कथाओं को किस प्रकार प्रभावित किया है? उनके विचारों ने लोकमानस को कैसे रूपांतरित किया है? उनके प्रभाव के गुणात्मक पहलू क्या हैं जो उन्हें लोककाव्य का अभिन्न अंग बनाते हैं? यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि, कबीर और सूरदास का लोककाव्य पर प्रभाव पहले के अनुमानों से कहीं अधिक व्यापक, गहरा और बहुआयामी है।

कबीर और सूरदास की काव्य रचनाओं का विस्तृत अध्ययन विभिन्न विद्वानों द्वारा किया गया है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को "वाणी का डिक्टेटर" कहा है, जो उनकी भाषा की प्रामाणिकता और तीखेपन को दर्शाता है (द्विवेदी, 1952)। डॉ. रामविलास शर्मा ने सूरदास के काव्य में "श्रृंगार और भक्ति का अद्भुत समन्वय" देखा है, जिसमें उनकी भावुकता और भाषा की माधुर्यता पर प्रकाश डाला गया है (शर्मा, 1973)। विदेशी विद्वानों ने भी इन कवियों का गहन अध्ययन किया है, जैसे लिंडा हेस ने कबीर की रचनाओं में सामाजिक न्याय के लिए उनके विद्रोह को रेखांकित किया (हेस, 1982) और जॉन स्ट्रैटन हॉले ने सूरदास के काव्य में कृष्ण भक्ति और वात्सल्य रस की प्रधानता पर बल दिया (हॉले, 1984)। इन अध्ययनों ने कबीर के सामाजिक सुधारवादी और सूरदास के भक्ति–प्रेम केंद्रित योगदानों पर प्रकाश डाला, जो उनके लोककाव्य पर भिन्न–भिन्न प्रकार के प्रभावों को समझने का आधार प्रदान करते हैं।

लोक साहित्य सामान्य जन का साहित्य है, जिसकी अभिव्यक्ति स्वाभाविक, सहज और प्रवाहमयी होती है। यह मौखिक परंपरा के रूप में पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलता है और इसके रचनाकार अक्सर अज्ञात होते हैं (सिंह, 2024)। लोक साहित्य की यह "अज्ञात रचनाकार" की विशेषता स्वयं इस बात का प्रमाण है कि, कबीर और सूरदास के पद और दोहे लोकमानस में इस तरह घुल–मिल गए कि, उनकी मूल रचनाकारिता गौण हो गई और वे सामूहिक विरासत का हिस्सा बन गए। यह उनके प्रभाव की गहराई को दर्शाता है, क्योंकि उनका काव्य व्यक्तिगत रचना न रहकर सामुदायिक चेतना का प्रतीक बन गया।

हालाँकि, उपरोक्त सभी अध्ययनों में कबीर और सूरदास के लोककाव्य पर प्रभाव का गुणात्मक विश्लेषण नहीं किया गया है। यह शोध इसी कमी को पूरा करने का प्रयास करता है, जिससे उनके कार्यों की व्याप्ति और गहराई को अधिक प्रभावी ढंग से समझा जा सके। यह विश्लेषण हमें 'क्यों' और 'कैसे' के प्रश्नों का उत्तर देने में मदद करेगा, जो उनके प्रभाव की वास्तविक सीमा का पता लगाएगा।

इस शोध में गुणात्मक विश्लेषण पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसका उद्देश्य कबीर और सूरदास के लोककाव्य पर प्रभाव को समझना और उसकी व्याख्या करना है। यह विधि किसी विषय के बारे में गहन निष्कर्ष निकालने के लिए पाठों, संदर्भों और व्याख्याओं का संग्रह और विश्लेषण करती है। गुणात्मक पद्धति का चुनाव इस परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए आवश्यक है

कि, इन कवियों का प्रभाव 'पहले के अनुमानों से कहीं अधिक व्यापक और गहरा' है, क्योंकि यह हमें उनके संदेशों के सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक प्रभावों को समझने की अनुमति देता है।

शोध के लिए स्रोत संग्रहण दो मुख्य चरणों में किया गयाः

1. **काव्य चयनः** कबीर ग्रंथावली (द्विवेदी, 1952) और सूरसागर (शर्मा, 1973) से प्रतिनिधि रचनाओं का चयन किया गया, जिनमें उनकी विचारधारा, शैली और भाषा का प्रतिनिधित्व होता है।

2. **लोक साहित्य संग्रहः** ब्रज, अवध और भोजपुरी भाषी क्षेत्रों से लोकगीतों, कहावतों, मुहावरों और लोक कथाओं का अध्ययन किया गया। इस संकलन में संस्कार गीत, गाथा–गीत, मौसमी गीत और अन्य मौखिक परंपराएँ शामिल थीं। लोक साहित्य का यह क्षेत्रीय संग्रह हमें सूरदास के ब्रज–केंद्रित प्रभाव और कबीर के अधिक व्यापक, 'सधुक्कड़ी' भाषा–आधारित प्रभाव के बीच के अंतर को गुणात्मक रूप से समझने में मदद करेगा।

स्रोत के विश्लेषण के लिए निम्नलिखित गुणात्मक विश्लेषणात्मक उपकरणों का उपयोग किया गयाः

1. **पाठ विश्लेषणः** कबीर और सूरदास की रचनाओं और संकलित लोकगीतों में शब्दों, वाक्यांशों और विषयों का साहित्यिक विश्लेषण किया गया। यह विधि केवल शाब्दिक उपस्थिति ही नहीं, बल्कि उनके विचारों और अर्थों की सूक्ष्म व्याप्ति को भी समझने में मदद करती है।

2. **विषयगत विश्लेषणः** लोकगीतों और कथाओं के संग्रह से अंतर्निहित विषयों और पैटर्न को निकाला गया। यह तकनीक यह पहचानने में सहायक थी कि, कबीर और सूरदास के प्रमुख विषय (जैसे सामाजिक न्याय, भक्ति, प्रेम) लोककाव्य में किस प्रकार प्रकट होते हैं और उनका अर्थ कैसे बदलता है।

3. **तुलनात्मक विश्लेषणः** कबीर और सूरदास के प्रभाव के बीच तुलना की गई ताकि उनके भिन्न–भिन्न योगदानों को समझा जा सके। यह विधि यह समझने में मदद करती है कि, कैसे एक कवि ने विचारों की व्याप्ति पर जोर दिया, जबकि दूसरे ने भावों की गहराई पर।

कबीर का लोककाव्य पर प्रभाव उनकी क्रांतिकारी भाषा और सामाजिक संदेशों के कारण है। उन्होंने अपनी 'सधुक्कड़ी' भाषा में सरल और सहज ढंग से ऐसे जटिल दार्शनिक और सामाजिक विचारों को प्रस्तुत किया कि, वे सीधे जनमानस के हृदय में उतर गए। उनका प्रभाव मुख्य रूप से दो रूपों में देखा जा सकता हैः

1. **सामाजिक और नैतिक प्रभावः** कबीर ने अपनी वाणी से समाज में व्याप्त कुरीतियों, जातिवाद, और धार्मिक पाखंड के खिलाफ जागरूकता फैलाई। उनके दोहे और साखियाँ आज भी लोगों की जुबान पर हैं और उनकी सच्चाई तथा तीखापन लोगों को सोचने पर मजबूर करते हैं। "जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान" जैसा उनका दोहा एक कहावत बन गया है, जो इस बात का प्रमाण है कि, उनके विचार लोक चेतना का हिस्सा बन गए हैं (गुप्ता, 2021)।

   - **उदाहरणः** गाँव–देहात में जब भी कोई व्यक्ति जन्म या जाति के आधार पर भेदभाव करता है, तो लोग अक्सर कबीर की पंक्तियों का उपयोग करते हैं, "ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होय / सुबरन कलस सुरा भरा, साधु निंद्या सोय।" यह दिखाता है कि, कबीर का काव्य केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि एक सामाजिक हथियार बन गया है।

2. **दार्शनिक और आध्यात्मिक प्रभावः** कबीर ने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया, जिसमें ईश्वर को किसी विशेष रूप या मंदिर में नहीं, बल्कि हर प्राणी के भीतर देखा गया। उनका यह संदेश लोकगीतों में भी परिलक्षित होता है।

   - **उदाहरणः** निर्गुण भजन, जैसे "मोको कहाँ ढूंढे रे बन्दे, मैं तो तेरे पास में," कबीर के इस दर्शन को दर्शाते हैं कि, ईश्वर को बाहर नहीं, बल्कि अपने भीतर खोजना चाहिए। यह भजन लोकगायन परंपरा का एक अभिन्न अंग बन गया है।

सूरदास का लोककाव्य पर प्रभाव उनकी भावुकता और साहित्यिक माधुर्य के कारण है। उन्होंने अपनी ब्रजभाषा के माध्यम से कृष्ण भक्ति को इस तरह से प्रस्तुत किया कि, वह लोकमानस के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ गया। उनका प्रभाव मुख्य रूप से दो रूपों में देखा जा सकता हैः

1. **भक्ति और वात्सल्य रस का प्रभावः** सूरदास ने कृष्ण की बाल–लीलाओं और राधा–कृष्ण के प्रेम का अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किया। उनके पद लोकगीतों, विशेषकर ब्रज क्षेत्र में, में सहज रूप से समाहित हो गए।

   - **उदाहरणः** "मैया कबहुं बढ़ैगी चोटी, कितिक बार मोहि दूध पियत भई, यह अजहूं है छोटी" जैसे पद आज भी ब्रज की माएं अपने बच्चों को लोरी के रूप में सुनाती हैं। यह दिखाता है कि, सूरदास का काव्य केवल धार्मिक नहीं, बल्कि पारिवारिक और सामाजिक जीवन का भी हिस्सा बन गया है (सिंह व कुमार, 2017)।
   - इसी तरह, "जसोदा हरि पालने झुलावे" जैसे वात्सल्य रस के पद लोकगीतों में गाए जाते हैं, जो सूरदास के काव्य की भावनात्मक गहराई को दर्शाते हैं।

2. **भाषाई और शैलीगत प्रभावः** सूरदास ने ब्रजभाषा को साहित्यिक ऊँचाइयों तक पहुँचाया, जो स्वयं लोकभाषा का ही एक परिष्कृत रूप है। उन्होंने पद शैली का उपयोग किया, जिसमें गेयता और माधुर्य का अद्भुत समन्वय था। इस शैली ने लोकगायकों को अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एक नया माध्यम दिया।

   - **उदाहरणः** लोक गायन में आज भी सूरदास के पदों को उनकी मूल धुन और शैली में गाया जाता है, जो उनके शैलीगत प्रभाव का सबसे बड़ा प्रमाण है। रासलीला और लोक नाट्य में भी उनके पद अनिवार्य रूप से शामिल किए जाते हैं।

कबीर और सूरदास दोनों ने लोककाव्य को प्रभावित किया, लेकिन उनके प्रभाव की प्रकृति अलग–अलग थी।

- **कबीर का प्रभाव व्यापक थाः** उन्होंने अपनी 'सधुक्कड़ी' भाषा के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों और सामाजिक वर्गों तक अपने विचारों को पहुँचाया। उनका प्रभाव विचारों की व्याप्ति पर केंद्रित था।
- **सूरदास का प्रभाव गहरा थाः** उन्होंने ब्रजभाषा के माध्यम से एक विशेष क्षेत्र में कृष्ण भक्ति के माध्यम से लोगों के हृदयों को छुआ। उनका प्रभाव भावों की गहराई पर केंद्रित था।

कबीर ने लोककाव्य को सामाजिक चेतना का वाहक बनाया, जबकि सूरदास ने उसे भावुकता और भक्ति का माध्यम बनाया। इस प्रकार, इन दोनों कवियों ने मिलकर लोककाव्य की विविधता को बढ़ाया और उसे एक नया आयाम दिया।

निष्कर्ष

यह शोध पुष्टि करता है कि, कबीर और सूरदास का भारतीय लोककाव्य पर गहरा और व्यापक प्रभाव है। उनकी रचनाएँ न केवल भक्ति आंदोलन के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं, बल्कि उन्होंने समाज के विभाजन को समाप्त करने और भक्ति को एक नया आयाम देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने लोककाव्य को सामाजिक चेतना, धार्मिक सहिष्णुता और मानवीय मूल्यों का वाहक बनाया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला है कि, लोककाव्य में कबीर और सूरदास का प्रभाव पहले से अधिक व्यापक और गहन है। उनकी वाणी आज भी लोगों के हृदय में गूंजती है और लोककाव्य को प्रकाशित करती है।

शोध की सीमाएँ और भविष्य के लिए सुझाव

सीमाएँ: यह शोध मुख्य रूप से गुणात्मक विश्लेषण पर आधारित है। हालांकि, लोककाव्य की विविधता को देखते हुए, कुछ क्षेत्रीय परंपराओं का गहन विश्लेषण इस अध्ययन की एक सीमा हो सकती है। भविष्य में ऐसे शोध की आवश्यकता है जो मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों पहलुओं का समावेश करें।

- कबीर और सूरदास के प्रभाव का क्षेत्रीय लोककाव्य पर अलग–अलग अध्ययन किया जा सकता है।
- कबीर और सूरदास की रचनाओं का लोक नाट्य, लोक संगीत और लोक कलाओं पर प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- आधुनिक लोककाव्य में कबीर और सूरदास की प्रासंगिकता का अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. कबीर. राजकमल प्रकाशन, 1952.
2. गुप्ता, सुरेंद्र कुमार. "संत कबीर ऐज अ मिस्टिक पोएट" जर्नल ऑफ़ लैंग्वेज एंड लिंग्विस्टिक स्टडीज़, खंड 17, अंक 2, 2021, पृष्ठ 1412–1425.
3. हेस, लिंडा. कबीर एंड द कबीर पंथ. स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यू यॉर्क प्रेस, 1982.
4. हॉले, जॉन स्ट्रैटन. सूर दासः पोएट, सिंगर, सेंट, संत. यूनिवर्सिटी ऑफ़ वाशिंगटन प्रेस, 1984.
5. मीणा, सिया राम. "सूरदास के काव्य में प्रकृति चित्रण." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस इन्वेंशन (आईजेएचएसएसआई), खंड 6, अंक 11, 2017, पृष्ठ 98–102.
6. नंदा, अनन्या. "ओरलिटी, ओरल ट्रेडीशन्स एंड कबीर" एड लिटरमः एन इंग्लिश जर्नल ऑफ़ इंटरनेशनल लिटरेटी, खंड 3, 2018, पृष्ठ 1.
7. रानी, मोनिका. "कबीरदास का समाज दर्शन." जर्नल ऑफ़ एमर्जिंग टेक्नोलॉजीज़ एंड इनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर), खंड 6, अंक 2, 2019, पृष्ठ 626.
8. शर्मा, रामविलास. सूरदास. भारतीय ज्ञानपीठ, 1973.
9. सिंह, अमित कुमार, और सुनीता रानी घोष. "कबीर के काव्य में 'लोक'." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ हिंदी रिसर्च, खंड 10, अंक 2, 2024, पृष्ठ 11–13.
10. सिंह, ममता, और वंदना कुमार. "सूरदास का वात्सल्य प्रेम." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिव्युज़ एंड रिसर्च इन सोशल साइंस, खंड 5, अंक 1, 2017, पृष्ठ 12–14.
11. शर्मा, डॉ. सीमा. "भारतीय संस्कृति के परिवर्तन में भक्ति आन्दोलन का महत्व." इंस्पिरा – जर्नल ऑफ़ मॉडर्न मैनेजमेंट एंड एंटरप्रेन्योरशिप (जेएमएमई), खंड 10, अंक 03, 2020, पृष्ठ 269–274.
12. त्रिपाठी, पूनम. "कबीर दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य की महत्ता." श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, खंड 6, अंक 8, भाग–1, 2019, पृष्ठ H–112.